महामान्या सुश्री एलेन जॉनसन सरलीफ राष्ट्रपति, लाइबेरिया गणराज्य द्वारा ''एक परिवर्तनकारी कार्यसूची के सामाजिक समावेशन आयाम'' विषय पर छठा बाबू जगजीवन राम स्मृति व्याख्यान

विज्ञान भवन, नई दिल्ली, भारत

12 सितम्बर, 2013

मैडम, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री;
बाबू जगजीवन राम प्रतिष्ठान के निदेशक मंडल की अध्यक्ष;
माननीय स्पीकर;
मंच पर विराजमान अन्य गणमान्य अधिकारीगण;
भारतीय तथा लाइबेरियाई सरकारों के अधिकारी;
विद्यार्थी;
गणमान्य देवियो और सज्जनो :

मैं, आपको स्वयं अपनी ओर से तथा लाइबेरिया की जनता की ओर से शुभकामनाएं देती हूं। हम भारत सरकार को अपने वास्तविक रूप से आश्चर्यजनक देश का दौरा करने के लिए निमंत्रण की हार्दिक सराहना करते हैं। हम भारत के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों की कद्र करते हैं और इस यात्रा के दौरान हमने विभिन्न करार संपन्न किए हैं जिनका उद्देश्य हमारे दोनों देशों और हमारे लोगों के बीच संबंधों को विस्तारित करने तथा गहन करना है।

हम ''एक परिवर्तनकारी कार्यसूची के सामाजिक समावेशन आयाम'' विषय पर आज का व्याख्यान देने के लिए बाबू जगजीवन राम प्रतिष्ठान को निमंत्रण देने के लिए धन्यवाद देते हैं। हम आज यहां केवल एक व्यक्ति के जीवन और कार्य के कारण मौजूद हैं। यह प्रतिष्ठा की बात है कि किसी व्यक्ति के चले जाने के बहुत पश्चात्, उसका जीवन और कार्य पीढ़ियों के जीवन को सवँरना जारी रखते हैं।

बाबू जगजीवन राम भारतीय समाज में एक दूरदृष्टा तथा सक्रिय भागीदार थे। उन्होंने यह देखा था कि भारत ने अन्य समाजों के समान आदतों, रिवाजों तथा परम्पराओं को संस्थागत रूप दिया था जिसने इसके कुछ सदस्यों को समाज के हाशिए पर रखा। उपेक्षित और बहिष्कृत लोगों की आवाज को नहीं सुना गया, उनके [illegible]

लोगों के बीच संबंधों को विस्तारित करने तथा गहन करना है।

हम ''एक परिवर्तनकारी कार्यसूची के सामाजिक समावेशन आयाम'' विषय पर आज का व्याख्यान देने के लिए बाबू जगजीवन राम प्रतिष्ठान को निमंत्रण देने के लिए धन्यवाद देते हैं। हम आज यहां केवल एक व्यक्ति के जीवन और कार्य के कारण मौजूद हैं। यह प्रतिष्ठा की बात है कि

सकते थे; इसके बावजूद, जीवन में अधिकांशतः जहां वे जन्मे थे अथवा जहां उनके माता-पिता थे द्वारा पूर्वनिर्धारित था। बाबू जगजीवन राम इसे बदलना चाहते थे। एक अन्य नायक, मार्टिन लूथर किंग ने कहा था ''लोगों को उनकी चमड़ी के रंग से नहीं बल्कि उनके चरित्र से पहचाना जाना चाहिए''।

बाबू जगजीवन राम की भारतीय लोगों, उनकी संस्कृति और परम्पराओं में अडिग आस्था थी। उनका विश्वास था कि भारत बेहतर हो सकता है, भारतीय अतुल्य सौम्य और महानता में सक्षम हैं और कि भारतीय समाज उपेक्षितों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सौम्य होता। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए अभियान चलाया, पुस्तकें लिखी और उस प्रत्येक व्यक्ति से अनुनय-विनय किया जिन्होंने उन्हें सुना। उनका तर्क था कि भारतीय समाज भिन्न हो सकता था और कि भारतीय समाज न केवल कुछ के लिए एक मुक्त समाज के लाभ प्रदान करने में सक्षम था बल्कि सभी लोगों के लिए।

वह संस्था जो आज हमारी मेजवानी कर रही है उस कार्य को जारी रखे हुए है। भारतीय समाज की उसकी समस्याओं को पहचानने तथा सामूहिक रूप से उनका समाधान करने की ताकत और क्षमता में आस्था एक विधानस्वरूप है। बाबू जगजीवन राम उस कटुता के आगे नहीं झुके थे जो यह कहती थी कि ''हमारे लोग पीढ़ियों से यह करते आ रहे हैं''। उनका विश्वास था कि भारत भिन्न और बेहतर हो सकता है – कि किसी कार्य अथवा व्यवहार की नैतिकता वह कितने लम्बे समय से है अथवा कितने लोग इसका व्यवहार कर रहे हैं द्वारा निर्धारित नहीं होती है बल्कि किसी समाज की नैतिक ताकत उसके अत्यधिक संवेदनशील - बहिष्कृत, अनाथ, वृद्ध और विधवाओं – वे जो स्वयं इसके लिए लड़ने में असक्षम हैं द्वारा इसे कैसे व्यवहृत करते हैं, में आंकी जाती थी।

विश्व में हमारे सार्वभौमिक और राष्ट्रीय समाजों और हमारे स्थानीय समुदायों में बाबू जगजीवन राम की और अधिक आवश्यकता है। इन्हीं के समान, हमारी समस्याओं का आकार हमें बाधित अथवा भयभीत नहीं करें। विश्व के लिए भारत का यह विश्वास वरदान है कि समाज बेहतर होना चाहिए और बेहतर हो सकता था कि हमारे अपेक्षाकृत अधिक सार्वभौमिक समाज में सामूहिक सार्वजनिक वस्तुएं भारत में, अफ्रीका में, लैटिन अमेरिका में, एशिया में इसके सभी नागरिकों द्वारा बांटी जानी चाहिए।

मानव विकास सूचकांक पर एक नजर डालने से यह प्रदर्शित होता है कि शेष संसार ने मानवीय दशा सवाँरने में महान प्रगति की है जबकि प्रगति अफ्रीका में इतनी तेज नहीं हुई है। मातृत्व तथा बाल मृत्यु पर घटी है फिर भी ये पर्याप्त रूप से तीव्र नहीं हैं। स्वास्थ्य और सफाई की पहुंच विस्तारित हुई है फिर भी वांछित गति करने के लिए शेष है। हमारे लोगों की मानवीय दशा में धीमी वृद्धि समस्त महाद्वीप की सकल विकास प्रगति आंकड़ों में अभूतपूर्व वृद्धि के समय आयी है। जबकि जीडीपी समृद्धि ने औसत आय को आगे बढ़ाया है, सदैव इसके परिणामस्वरूप लोगों के जीवन में आनुपातिक सुधार नहीं हुआ।

यह किसी से छिपा नहीं है कि अधिकांश अफ्रीका मूल्य श्रृंखला के मामले में और नीचे गिरा है तथा परिणामस्वरूप भुगतान पैमाने के निम्न स्तर पर है तथापि ऐसी मूल्य श्रृंखलाएं खनिजों और अन्य संसाधनों जो हमारे पास हैं, के बिना अस्तित्व में नहीं होंगी। हमारी क्षतिपूर्ति निम्नतम है क्योंकि हमने कोई मूल्य नहीं बढ़ाया है। लोगों ने मूल्य सूचकांक को प्रोत्साहित किया है, लाभ गैर-आनुपातिक हैं और तथापि, हमारे पास प्रचुर प्राकृतिक संपदा है फिर भी हम विश्व में गरीबतम व्यक्तियों के बीच हैं। हमारे नागरिक हमारे खनिज संसाधन जो सीमित हैं, से वास्तविक लाभ प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

जब तक हम अपने ढांचे में निवेश कर सकते हैं, तब तक हमारी अर्थव्यवस्था परिवर्तन संबंधी अपेक्षित दर पर समृद्धि नहीं करेगी। जब तक हम हमारे उद्यमियों के लिए परिवहन लागतों को नहीं घटाते, तब तक हमारी अर्थव्यवस्थाएं गरीबी से लड़ने की दर में वृद्धि नहीं करेगी। जब तक उत्पादक संरचना तेजी और वस्तु मूल्यों की बढ़ोत्तरी के अध्यधीन अर्थव्यवस्थाएं जकड़ी रहती हैं, तब तक गरीबी हमारे साथ रहेगी। जिस समय यह होता रहता है, तब तक यह प्रजातंत्र के स्थायित्व और समृद्धि को भयभीत करता है।

लाइबेरिया चर्चा का विषय है, अस्थायित्व के आरम्भ के पूर्ववर्ती दशक में, लाइबेरिया की समृद्धि उल्लेखनीय थी। देश 1970 के दशक में 7% की वार्षिक औसत दर से समृद्ध हुआ था। 1980 तक, लाइबेरिया की जीडीपी प्रति व्यक्ति 1765 अमरीकी डालर के शीर्ष पर पहुंची थी। जिससे देश मिडिल आय स्तर प्रवेश द्वार के निकट आया। जबकि यह वृद्धि शीर्ष सांख्यिकी में थी, इसने समस्त देश में गरीबी और असमानता की गंभीर समस्याओं को छुपाए रखा। इस प्रकार लाइबेरिया विकास के बिना समृद्धि देश के रूप में वर्गीकृत हुआ था।

जब 1970 की सार्वभौमिक मंदी थी प्राथमिक वस्तु मूल्यों में तीव्र गिरावट आई थी और तेल के दाम बढ़े, समृद्धि गायब हो गई, अर्थव्यवस्था अधिस्थापन में चली गई। परिणामी वंचन, मतभेद और उपेक्षा का एक लम्बा इतिहास थोप दिया गया, जिसने सत्ता परिवर्तन और संघर्ष की एक लम्बी अवधि का मंच तैयार किया था।

2003 तक, लाइबेरियाई अर्थव्यवस्था निर्बाध रूप से गिरती रही जिसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था ध्वस्त, ढांचा तथा संस्थाएं नष्ट हो गई जिसकी प्रगति के बावजूद, हमें अभी पूर्ण प्राप्ति करनी है।

2006 में, संघर्षोत्तर लाइबेरिया का पुनर्निर्माण आरंभ हुआ था। गत 7 वर्षों के दौरान, हमारा कार्य प्रगति के लिए एक आधारशिला, एक मजबूत नींव रखना था। इसके लिए स्थायित्व, समृद्धि, ऋण राहत, आर्थिक और सामाजिक ढांचे में सुधार अपेक्षित है, यह नींव किसी उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन है। सभी लाइबेरिया वासियों के लिए जीवन की गुणवत्ता सुधारने, रोजगार

सृजन करने; सेवाएं और स्थितियों का उद्देश्य है जो न केवल हमारे लोगों की न्यायोचित आवश्यकताओं को पूरी करेगा बल्कि उनके कल्याण की दशा को सुधारेगा। आगामी कुछ वर्षों में, हमें अपनी अर्थव्यवस्था में सबसे छोटे व्यापारी से लेकर सबसे बड़े भूमि मालिक तक सभी लाइबेरिया वासियों को समायोजित करना है। हमारे प्रथम 6 वर्षों में, हमने लाइबेरिया को ऊपर उठाया था। आगामी 4 वर्षों में, हमें वह सब करना चाहिए जो हम लाइबेरिया वासियों को ऊपर उठाने के लिए कर सकते हैं।

कैसे, कब, हम अपनी पुरानी अर्थव्यवस्था को कुछेक के लाभ के लिए संचालित मानी गई एक कृषि अथवा अनुदानग्राही अर्थव्यवस्था से एक आधुनिक, समावेशी अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करते हैं? ऐसी कोई जादू की छड़ी नहीं है जिसे हम हिलाकर हमारी कृषिगत आजीविका और बेरोजगारी प्रधान अर्थव्यवस्था को एक गतिशील विनिर्माण अर्थव्यवस्था में बदल सकते हैं। हम हमारे अशिक्षित और बेरोजगार युवाओं को रातों-रात डाक्टर, वकील और प्रोफेसर नहीं बना सकते। तथापि, उम्मीद है कि एक बेहतर भविष्य के लिए आशा कि किरण है यदि हम सब इसकी दिशा में कार्य करें, इस लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रत्येक लाइबेरियावासी को अच्छी शिक्षा, लाभदायक रोजगार की पहुंच हो और प्रत्येक युवा व्यक्ति अपना स्वयं के व्यवसाय का मालिक हो सकता है। शांति और देशभक्ति, से इस प्रकार का एक भविष्य हमारे अधिकार क्षेत्र में है।

हमें अपने ढांचे का निर्माण करना आरंभ कर देना चाहिए। मशीनों के प्रचालन की शक्ति, आपूर्तियों और उत्पादों के परिवहन के लिए सड़कों और विदेशी बाजारों के लिए निर्यात वस्तुओं की सस्ती ढुलाई के बिना नये लाइबेरियाई उद्योगों का सृजन असंभव है। एक मजबूत अर्थव्यवस्था सृजित करने के लिए एकमात्र मार्ग इन आर्थिक आवश्यक वस्तुओं – बिजली, सड़के, बंदरगाह ढांचे - जो इन उद्योगों को गति देते हैं, की पहुंच की आपूर्ति करना है। उच्च गुणवत्ता, वहनीय ढांचे की इस राष्ट्रीय रीड़ की हड्डी के बिना, हमारे प्रयास निरर्थक होंगे। यह हम सभी लाइबेरिया वासियों के लिए एक उच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

सहयोगियों के साथ कार्य करते हुए, लाइबेरिया ने एक प्रयोग करने का प्रयास किया था। हमने एक प्रायोगिक नकदी अंतरण कार्यक्रम अत्यधिक आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में से एक में यह कार्यक्रम आरंभ करके जहां हमारी कुछ अत्यधिक संवेदनशील तथा खाद्य असुरक्षित जनसंख्या रहती है, कार्यान्वित किया था। इन परिवारों का नेतृत्व पुराने तरीके से वृद्धजनों, जो लोग विकलांगता और चिरकालिक बीमारियों से ग्रस्त रहते हैं, द्वारा किया जाता था। कुछ युवा अथवा उन एकल माताओं के साथ जिसके अनेक आश्रित हैं, के नेतृत्व में रहते थे।

अपेक्षाकृत अल्प धनराशि दे करके – लगभग 20 अमरीकी डालर एक माह – नियमित और पूर्व अनुमानित आधार पर, हमने लाभार्थियों के जीवन में सुधार देखा था। इस कार्यक्रम के एक स्वतंत्र तृतीय पक्ष मूल्यांकन से यह बाध्यकारी प्रमाण मिला था कि नकदी अंतरण कार्यक्रम ने खाद्य सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य की पहुंच और लाभार्थियों की आर्थिक दशा को सुधारा था। इससे प्रदर्शित

हुआ था कि विद्यालय उपस्थिति बढ़ी और 60% बच्चों ने अंकों में सुधार किया था। जब बीमारी से पीड़ित थे वे उनके परिवार के सभी सदस्यों के लिए संभवतः पूर्ववर्ती वर्षों में अधिक स्वास्थ्य देखभाल की मांग करते थे। और अधिक महत्वपूर्ण, इस कार्यक्रम ने अंतर-पीढ़ीगत गरीबी की विरासत रोकने में अत्यधिक क्षमता प्रदर्शित की।

लाइबेरिया में और अफ्रीका में, प्राकृतिक संसाधनों से अभिवृद्धि लाभ का अर्थ हमें ऐसे तंत्रों को जो हमारे देशों के भीतर न्यायोचित वृद्धि उत्पादित करते हैं, उनका संस्थानिकृत किया जाना जारी रखना चाहिए। बाबू जगजीवन राम प्रतिष्ठान, जिसने धर्मांतरितों को एक जाति विहीन समाज बनाने के निमित्त हेतु प्रेरित किया, असमानता के विरुद्ध लड़ाई संस्थानीकरण का एक उदाहरण है। ऐसे देशों जैसा कि मेरा स्वयं का देश, सामाजिक संरक्षण कार्यक्रमों के लिए संसाधन राजस्व को बांधने के लिए एक आकर्षित विकल्प है। जबकि हम ढांचे में निवेश करना तथा उद्यमशीलता कार्यकलाप को बढ़ावा देना जारी रखते हैं, हमें उस संस्थागत ढांचे में निवेश करने के बारे में जो हमारे लोगों के लिए सामाजिक कल्याण लाभ प्रदान करता है, नहीं भूलना चाहिए।

चूंकि सहस्राब्दि विकास लक्ष्य (एमजीडी) की अवधि दो वर्ष के थोड़े समय में समाप्त हो जानी है, इसलिए विश्व एक उत्तराधिकारी शासन, गरीबी उन्मूलन तथा स्थायी सामाजिक न्याय और साम्य के निमित्त एक परिवर्तनकारी कार्यसूची का आह्वान करता है। मुझे संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा गठित एक 24 – सदस्य उच्च स्तर पेनल की सह-अध्यक्ष के रूप में कार्य करने के लिए, एक 2015 - पश्च उत्तराधिकारी सार्वभौमिक कार्यसूची प्रस्तावित करने के लिए सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ''एक नई सार्वभौमिक भागीदारी; दीर्घावधिक विकास के माध्यम से गरीबी उन्मूलन और अर्थव्यवस्थाओं का रूपान्तरण'' नामक हमारी रिपोर्ट में 5 बड़े परिवर्तनकारी उपायों के रूप में प्राथमिकताओं के लिए एक प्रगतिशील, बाध्यकारी और समेकित दीर्घावधिक विकास कार्यसूची प्रस्तावित है।

यह आर्थिक अवसरों तथा आजीविकाएं सुधारने के लिए अत्यधिक गरीबी समाप्त करने के लिए एक गहन आर्थिक परिवर्तन में एक आगे की छलांग का आह्वान करता है। यह तीव्र, न्यायोचित समृद्धि – न तो किसी कीमत पर वृद्धि न ही वृद्धि में अल्पावधिक तेजी – किन्तु स्थायी, दीर्घावधिक, समावेशी समृद्धि जो बेरोजगारी, विशेष रूप से युवा बेरोजगारी की चुनौतियों पर काबू पा सके, जो यह सुनिश्चित कर सके कि संसाधन की कमी और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन पूर्णतया निपटाए जा सकें, के प्रति प्रतिबद्धता का आह्वान करता है। यह एक ऐसी समावेशी समृद्धि की मांग करती है जो सार्वभौमिक अर्थव्यवस्था द्वारा समर्थित हो और जो वित्तीय स्थायित्व, स्थायी, दीर्घावधि निजी वित्तीय निवेश बढ़ाना और मुक्त, न्यायोचित और विकास अनुकूल व्यापार प्रोत्साहित करती हो। विगत के वंशवाद से पलायन करते हुए, यह परस्पर सम्मान और उत्तरदायित्वों पर आधारित एक सार्वभौमिक भागीदारी की मांग करती है, एक ऐसी भागीदारी जिसमें निजी क्षेत्र और सभ्य समाज सहित सभी हितधारक शामिल होते हैं।

समाज के हाशियों से प्रस्थान, जहां गुणवत्ता जीवन की पहुंच एक विलासिता है, उनमें से एक यह है कि जिसे सामूहिक रूप से लिया जाना चाहिए। बाबू जगजीवन राम ने इसको माना था और राज्य से उन दशाओं में सुधार की मांग की थी जिनके अंतर्गत यह समूह वार्ता कर सके और जिसमें इसकी राय हो। इसमें भारत का अनुभव न्यायोचित और सामाजिक न्याय के संबंध में एक बढ़ती हुई सार्वभौम राय के लिए आधार प्रदान करता है। भारत में अपनी स्वयं की असमानताएं हो सकती हैं किन्त इसके पास एक उदाहरण बनने तथा विश्व की सार्वभौमिक कार्यसूची को बदलने के लिए सफलता की शक्ति, अनुभव और सार्वभौमिक हैशियत है।

बाबू जगजीवन राम ने समाज के हाशिए से उपेक्षित लोगों को उनका सम्मान बहाल करने तथा मानव प्राणियों के रूप में उनके मूल्य को उठाने के लिए अपने जीवनकाल को व्यतीत किया था। उनके कार्य इस प्रतिष्ठान के माध्यम से आज जारी हैं। हम आप उन सभी की सराहना करते हैं जिन्होंने यह संभव बनाया है।

लाइबेरिया को अनेक चुनौतियों के बावजूद, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के प्रति वचनबद्धता का एक ठोस उदाहरण बनना जारी रखना चाहिए, उस समृद्धि को बढ़ावा देना जो समावेशी हो, जारी रखना चाहिए, सार्वभौमिक आर्थिक घालमेल के एक न्यायोचित अंश के लिए वकालत करना जारी रखना चाहिए। भागीदारी से, मिलकर, लाइबेरिया और भारत एक जाति विहीन विश्व, एक न्याय संगत विश्व, समान अवसर आधारित एक विश्व के बाबू जगजीवन राम के सपने को अपेक्षाकृत अधिक निकट ला सकते हैं।

धन्यवाद ।